मेहरबानी से तेरी मेरी झोली है भरी
मुझे तेरा प्यार मिला,तेरा दरबार मिला
मैं अब तेरे रंग में रंगी

1- सतगुरू बन कर सुरता मेरी,
माया से है फिराई
बेशक इलम से किया उजाला,
राह वतन की दिखाई
मेहर तेरी,कोट गुनी बढ़ती रहे

2- ओ पिया तेरा इश्क बड़ा,
अब मैंने समझा ये
जो दिल में ये तेरे छुपा,
दिल की बात बताई
हुकम से रूह ने खेल ये देखा,ऐसी लीला रचाई

3- खिलवत अपनी जाहेर करके,
मारफत भी समझाई
दिल रूहों के जाग्रत हो गए,
इश्क की लज्जत पाई
अनहोनी हकें करी,ऐसी हिकमत दिखाई

Nijanand App